बी. पी .एच. ई. सोसायटी का,

अहमदनगर महाविद्यालय, अहमदनगर

हिंदी विभाग

यादें

संपादक

सुवर्णा भारत हिवाळे

(एम. ए. प्रथम वर्ष)

वार्षिक पत्रिका

संयुक्तांक

(2019-2022)

अंक - 10

❀ मार्गदर्शक ❀

प्राचार्य डॉ. आर. जे. बार्नबस

अहमदनगर कॉलेज, अहमदनगर

❖ प्रबंध संपादक ❖

डॉ. ऋचा शर्मा

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

❖ कार्यकारी संपादक ❖

डॉ. पूर्णिमा बेहेरे

सहा. प्राध्यापक

❖ संपादक ❖

सुवर्णा भारत हिवाळे

एम.ए. प्रथम वर्ष

❖ सह संपादक ❖

प्रा. चेतन रवेलिया

❖ शब्द संयोजन ❖

प्रा. फरहान शेख

बी. पी. एच. ई. सोसायटी के संस्थापक 'रेव्ह. डॉ. बी. पी. हिवाळे जी' को सादर समर्पित

कुशल नेतृत्व

माननीय प्राचार्य डॉ. रजनीश जे. बार्नबस जी

जिनके मार्गदर्शन तथा कुशल नेतृत्व में अहमदनगर कॉलेज

निरंतर विकास कर रहा है |

मेरी बात ...

'यादें' पत्रिका का संयुक्तांक आपके हाथ में है। कोविड के कारण हिंदी विभाग की इस वार्षिक पत्रिका का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है| मार्च 2020 से ऐसा लगा कि जैसे शांत जल में किसी ने पत्थर मारकर जीवन में हलचल पैदा कर दी हो| दूसरी तरफ कोविड के डर से जीवन थम गया| संपूर्ण विश्व में कोविड का खौफ, घबराहट और बेचैनी दिखाई देने लगी। मृत्यु का भय सब तरफ था। इससे बचने के लिए हाथ में सैनीटाइजर और चेहरे पर मास्क दिखाई देने लगे। मरीजों की संख्या ना बढ़े इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने देश में लॉकडाउन की घोषणा कर दी। लॉकडाउन के कारण देश की आर्थिक व्यवस्था चरमरा गई। लोगों के पास रोजगार नहीं रहे। मजदूरों को भूखे-प्यासे दर ब दर भटकना पड़ा। देश का कोई राज्य मजदूरों को यह नहीं कह सका कि यहीं रुको हम तुम्हारी सारी जिम्मेदारी उठा लेंगे। ना जाने कितने मजदूर बेमौत मारे गए।

कोविड ने शिक्षा व्यवस्था को भी प्रभावित किया। शिक्षा का माध्यम ऑनलाईन हो गया। ऑनलाईन पढ़ाई चलती तो रही, परीक्षाएं भी होती रहीं लेकिन स्कूल, कॉलेज जाकर विद्यार्थियों को जो आनंद मिलता है, क्लासरूम टीचिंग से जो बातें सीखने को मिलती हैं, उनसे वे वंचित रह गए। इसका सकारात्मक पहलू यह रहा कि ऑनलाईन शिक्षा ने भविष्य के लिए अनंत संभावनाएं खोल दीं। दूर देशों के विद्वानों और रचनाकारों से सहजता से संपर्क स्थापित होने लगा। इसका लाभ हमारे विद्यार्थियों को भी मिला। लंदन से डॉ . वंदना मुकेश (कथाकार), मॉस्को से श्री सुशील आजाद, मुंबई से हिंदी की वरिष्ठ कथाकार सूर्यबाला के साथ उनकी रचना प्रक्रिया पर विद्यार्थियों ने बेबाक बातचीत की। टेक्नोलॉजी के कारण हम विश्व से जुड़ गए।

यादें पत्रिका हिंदी विभाग के विद्यार्थियों के परिश्रम का सुंदर रचनात्मक प्रतिफलन है। उनकी रचनात्मकता इस पत्रिका के माध्यम से निरंतर समृद्ध होती जाती है। 'यादें' पत्रिका का संयुक्तांक अहमदनगर महाविद्यालय के

पूर्व विद्यार्थियों की स्मृतियों को भी समेटे हुए है। अहमदनगर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रजनीश जे. बार्नबस जी का मार्गदर्शन तथा प्रेरणा हमें निरंतर प्राप्त होता है।

अंत में इतना ही कहना चाहूंगी कि भविष्य में हमारे विद्यार्थी भारत देश के योग्य नागरिक के रूप में रचनात्मक कार्य करें, सकारात्मक विचार रखें तथा देश के विकास में सहायक हों।

सर्वे भवंतु सुखिन: की कामना के साथ

हार्दिक शुभकामनाएं !

डॉ. ऋचा शर्मा

अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
अहमदनगर कॉलेज, अहमदनगर

संपादकीय

प्रिय छात्र - छात्राओं मुझे यह बताते हुए बहुत ही खुशी हो रही है कि अहमदनगर महाविद्यालय के हिंदी विभाग से प्रकाशित 'यादें' पत्रिका का यह अंक संयुक्तांक है। पिछले वर्ष कोरोना के चलते इस पत्रिका का प्रकाशन हम नहीं कर पाए| 'यादें' पत्रिका हिंदी विभाग का दर्पण है| उसी से विभाग की सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों के साथ ही विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचि का भी पता चलता है| यह पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि यहाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए हिंदी विभाग प्रतिबद्ध है| वे इस क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक प्रयास कर रहे हैं| हमारी यादें हमारे व्यक्तित्व का प्रमुख अंग होती है| हर एक के जीवन मे यादें तो होती ही है| यादों का जीवन की खुशियों से सीधा संबंध होता है| हम जीवनभर बचपन की यादों को ताजा करके खुश होने का मौका ढूँढते रहते है और जीवन में कुछ पल के लिए खुशी महसूस करते हैं| जो हमें जीवनभर याद रहती हैं|

हिंदी भाषा में लेखन कौशल एवं चिंतन को विकसित करने के लिए हिंदी विभाग निरंतर अग्रसर रहा है| छात्रों के भीतर रचनात्मक कौशल का विकास करना यही विभाग का और 'यादें' पत्रिका का उद्देश्य रहा है| छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उसमें निखार लाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है 'यादें' पत्रिका| यूँ तो छात्रों में रचनात्मक प्रतिभा बहुत अधिक होती है परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें उचित मार्गदर्शन मिले और यह मार्गदर्शन विभाग के प्राध्यापकों द्वारा निरंतर प्राप्त होता है|

अहमदनगर महाविद्यालय में हिंदी विभाग अपनी इसी विशिष्टता के कारण निरंतर चर्चा में रहता है| प्रत्येक वर्ष विभाग में 'हिंदी दिवस' का आयोजन किया जाता है| छात्रों की सृजनात्मक कौशल का विकास हो इसलिए 'पोस्टर्स स्पर्धा' का भी आयोजन किया जाता है| इसी प्रकार गत अनेक वर्षों से विभाग द्वारा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे के साथ मिलकर हिंदी निबंध स्पर्धा भी आयोजित की जाती है| अहमदनगर शहर में हमारा विभाग इस स्पर्धा का केंद्र है| छात्रों की दिन- प्रतिदिन इस पत्रिका के प्रति बढ़ती रुचि और विभिन्न माध्यमों से छात्रों का बढ़ता हुआ योगदान यह दर्शाता है कि इस पत्रिका ने विद्यार्थियों के बीच अपना लोकप्रिय स्थान बना लिया है| मुझे विश्वास है कि सभी 'यादें' पत्रिका का स्नेह भावना से स्वागत करेंगे| हिंदी विभाग के प्राध्यापकों का निरंतर मार्गदर्शन एवं विद्यार्थियों की कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण और निरंतर प्रयास के द्वारा पत्रिका का प्रत्येक अंक दिन प्रति दिन रुचिकर होता जा रहा है | विभागाध्यक्ष डॉ. ऋचा शर्मा मैडम, डॉ. साताप्पा चव्हाण सर, प्राध्यापक अशोक घोरपड़े सर, डॉ. पूर्णिमा बेहेरे मैडम, प्राध्यापक फरहान शेख सर आदि का मार्गदर्शन निरंतर विद्यार्थियों को प्राप्त होता है|

सुवर्णा भारत हिवाळे

एम. ए. द्वितीय वर्ष

❋ अनुक्रमणिका ❋

अ. नं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ क्रमांक
1.	कहाँ है लक्ष्य	रोहिणी	10
2.	बेटियाँ	रोहिणी	10
3.	माँ एक जन्नत	सुवर्णा हिवाळे	11
4.	नारी का जन्म	सुवर्णा हिवाळे	11
5.	आए बादल	शेख शिफा	12
6.	पानी और धूप	शेख शिफा	13
7.	आँखों में क्या है?	कंचन सोनी	13
8.	दोस्ती	पूजा कुमारी	14
9.	तुलसी की कविता	शेख मुस्कान	14
10.	जिंदगी	कंचन सोनी	15
11.	काँटों का प्रतिवेदन	चेतन विष्णु रवेलिया	15
12.	मैं समझ गया अम्मा.....	चेतन विष्णु रवेलिया	16
13.	द्वंद्व	चेतन विष्णु रवेलिया	16
14.	जिंदगी	रेखा कुमारी	17
15.	जिंदगी	निधि विजय चौहान	17
16.	जरूरी है	आयशा काज़ी	18
17.	इंसान अब हैवान लगता है	आयशा काज़ी	18
18.	महिला सबला – या अबला ?	सुवर्णा हिवाले	19-20
19.	दोस्ती का महत्व	पूजा कुमारी	20

अ. नं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ क्रमांक
20.	यारी	तृप्ति गुप्ता	21
21	भूख	चेतन रवेलिया	21-22
22	प्यार समर्पण या स्वार्थ ?	आयशा काज़ी	23
23	एल. जी. बी. टी	शेख सबीना	23
24.	मानवता का अंत	तृप्ति गुप्ता	23
25.	अदृश्य दानव	तृप्ति गुप्ता	24
26.	वैश्विक महामारी - कोरोना वायरस	*सुवर्णा हिवाळे*	25-26

' स्मृतियाँ.....'

(हिंदी विभाग के पूर्व विद्यार्थियों के अनुभव) 27

28.	मेरे जीवन के कुछ खुशी के पल	श्री. नजान सोमनाथ मुरलीधर	28
29.	अगर अहमदनगर महाविद्यालय नहीं होता.....?	प्रा. परशुराम रंगनाथ गणगे	28-30
30.	42 साल पहले के दिन याद आए	प्रा. मधुसूदन मुळे	30-31
31	सत्तर साल पुराना –	प्रा. रामदास संभाजी शेटे	31-32
32	जीवन पलटा	प्राचार्य विश्वास ग. काळे	33
33	ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना	डॉ. रेखी अमरजा अजित	33-34
34	सुनहरी यादों का सफर	श्री. सुदेश चंदर छजलाने	35
35	यादें	प्रा. आनंद त्रिपाठी	36
36	यादें मेरे कॉलेज की.....	प्रा. शेख फरहान लतीफ	37
37	हिंदी विभाग के बारे में मेरे विचार	प्रा. पूनम पांडे	38

कहाँ है लक्ष्य... ✍

लक्ष्य मेरा
दिखा दे मुझको
वो राह
दिखा दे मुझको
अभी तो
आँखें नहीं हैं मरी
उस राह पर चलना दिखा दे मुझको
मैं तो अभी नादान हूँ
समझदारी से अंजान हूँ
लक्ष्य मेरा दिखा दे मुझको
मैं दुनिया से अंजान हूँ
कहाँ जाऊ और किस राह पर जाऊँ
हर जगह से अंजान हूँ
किस राह पर जाऊँ और कौनसी राह चुनूँ
मैं और अभी नादान हूँ
इतना तो मैं जानती हूँ
सबको अंजान मानती हूँ
कौन लक्ष्य दिखाये मुझको
जिंदगी को ही मैं अपना गुरु मानती हूँ |

बेटियाँ ✍

जब – जब जन्म लेती है बेटियाँ,
खुशियाँ साथ लाती है बेटियाँ |

ईश्वर की सौगात होती है बेटियाँ,
सुबह की पहली किरण होती है बेटियाँ |

तारों सी शीतल होती है बेटियाँ,
आँगन की चिड़िया होती है बेटियाँ |

त्याग और समर्पण करना सिखाती है बेटियाँ,
रिश्तों को जोड़ना
और नए – नए रिश्ते बनाना सिखाती है बेटियाँ |

जिस घर में जाए, उस घर में उजाला लाती है बेटियाँ,
कई सारीं यादें और खुशियाँ लेकर आती हैं बेटियाँ |

बेटियों की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं होती है बेटियाँ

रोहिणी
(एफ. वाय. बी. ए.)

माँ एक जन्नत

माँ तो हमारे लिए एक जन्नत है,
हम तो उसके लिए एक मन्नत है |
हर दिल की यह एक चाहत है,
टूटे दिल की वह एक राहत है ||

स्वार्थ के लिए तो सब अपनाते हैं हमें,
नि:स्वार्थ बस माँ ही अपनाती है हमें |
अर्थ जाना जब प्यार का मैंने,
शर्त के बिना ही सँवारा है उसने ||

माँ तो ईश्वर का ही एक रूप है,
हम सब उसके लिए के सरूप है |
सुना है, भगवान के बहुरूप है,
जाना माँ ही तो उसका स्वरूप है ||

माना की यह जिंदगी धूल है,
माँ के बिना सब फिजूल है |
चलना उसके साथ यही मेरा उसूल है,
माँ ही तो स्नेह का फूल है ||

नारी का जन्म

नारी का जन्म मिला है तो,
सारी दुनिया को यह दिखलाना है,
व्यर्थ नहीं है यह जीवन तुम्हारा
अर्थ छिपा है इसमें गहरा ||

आएँगे बहुत से मोड़ तेरी जिंदगी में,
जाएँगे सब छोड़ तेरी जिंदगी से |
मगर ए नारी यही दरख्वास्त है तुझसे,
हार न मानना इस बंदगी से ||

समय तेरा साथ दे या न दे,
ईश्वर तेरा हाथ थाम ही लेगा |
इस दुनिया का क्या है ?
तू अपने आप ही चल पड़ना ||

हिम्मत अपनी तू बाँध लेना,
कीमत अपनी तू जान लेना |
व्यर्थ नहीं है यह जीवन तुम्हारा,
अर्थ छिपा है इसमें गहरा ||

सुवर्णा हिवाळे
(एम. ए. प्रथम वर्ष - हिंदी)

पानी और धूप ✍

अभी - अभी थी धूप,
बरसने लगा कहाँ से यह पानी
किसने फोड़े घड़े बादल के
की है इतनी शैतानी |

सूरज ने क्यों बंद कर लिया
अपने घर का दरवाजा
उसकी माँ ने भी क्या उसको
बुला लिया कहकर आजा |

जोर - जोर से गरज रहे हैं
बादल है किसके काका
किसको डाँट रहे है किसने
कहना नहीं सुना माँ का |

बिजली के आँगन में अम्मा
चलती है कितनी तलवार
कैसी चमक रही है फिर भी
क्यों खाली जाते हैं वार |

क्या अब तक तलवार चलाना
माँ वे सीख नहीं पाए
इसीलिए क्या आज सीखने
आसमान पर आए |

एक बार भी माँ यदि मुझको
बिजली के घर जाने दो
उस के बच्चों को तलवार
चलाना सिखना आने दो |

खुश होकर तब बिजली देगी
मुझे चमकती - सी तलवार
तब माँ कोई कर ना सकेगा
अपने ऊपर अत्याचार |

पुलिसमैन अपने काका को
फिर न पकड़ने आएँगे
देखेंगे तलवार दूर से ही
वे सब डर जाएँगे |

अगर चाहती हो माँ काका
जाए अब न जेल खाना
तो फिर बिजली के घर मुझको
तुम जल्दी से पहुँचाना |

काका जेल न जायेंगे अब
अब तुझे मँगा दूँगी तलवार
पर बिजली के घर जाने का
अब मत करना कभी विचार |

शेख शिफा
(एम. ए. प्रथम वर्ष - हिंदी)

आए बादल

आए बादल आए बादल
पानी जेबों में
भर लाए |
इतने सारे ताल - तलैया
कहाँ से तुम भर लाए
जेबों में भी कहीं ठहरता
पानी बुद्धु ?
बादल के पापा चिल्लाए
जेब उलट दी
उसने झटपट
पानी बरसा
टप - टप - टप - टप |

शेख शिफा
(एम. ए. प्रथम वर्ष - हिंदी)

जिंदगी

"ऐ जिंदगी तूने क्या
दिन दिखा दिया
कहाँ थे हम और
तूने कहाँ पहुँचा दिया"

"कभी जिम्मेदारियों से
भागते थे हम और
आज जिम्मेदारियों से
घिरे हैं हम"

"वो शामें भी कितनी
हसीन हुआ करती थीं
चार दोस्तों के साथ
मौज हुआ करती थी
वो भी एक समय था
जनाब जहाँ खुशियों की
महफिल जमा करती थी|"

कंचनसोनी
(एम. ए. प्रथम वर्ष हिंदी)

आँखों में क्या है?

माँ की आँखों में क्या है ? - ममता
पिता की आँखों में ? - कर्तव्य
गुरु की आँखों में क्या है - ज्ञान
और शिष्य की आँखों में ? -जिज्ञासा
गरीब की आँखों में क्या ? -बेबसी
धनवान की आँखों में क्या ? -लालसा
देश भक्त की आँखों में क्या ? - देशप्रेम
और नेताओं की आँखों में ? - कुर्सी

कंचन सोनी
(एम. ए. प्रथम वर्ष हिंदी)

दोस्ती ✍

कहीं देखा है तुमने उसे,
जो मुझे सताया करती थी ?
जब भी उदास होती थी मैं
मुझे हँसाया करती थी |
एक प्यार भरा रिश्ता था वो मेरा
जो मुझे अब भी याद आता है
खो गई वक्त के भँवर में कहीं
जो हर पल मेरे साथ होती थी
आज एक अजनबी की तरह हाथ मिलाती है
जो छोटी से छोटी बात मुझे बताया करती थी
कहीं मिले वो किसी मोड़ पर
तो उसे मेरा संदेसा देना
कोई है जो आज भी उसका इंतजार कर रही है
जिसे वो मेरा सच्चा साथी बोला करती थी |

पूजा कुमारी
(एम. ए. प्रथम वर्ष हिंदी)

तुलसी की कविता ✍

हरि ! तुम बहुत अनुग्रह किन्हों |
साधन – नाम बिबुध दुरलभ तनु, मोहि कृपा
करि दीन्हों ||२||

कोटि हूँ मुख कहि जात न प्रभुके, एक एक उपकार |
तदपि नाथ कछु और माँगिहौ, दीजै परम उदार ||२||

विषय – बारि मन – मीन भिन्न नहीं होत कबहुँ पल एक |
तोत सहौं बिपति अति दारुन, जनमत जोति अनेक ||३||

कृपा डोरि बनसी पद अंकुस, परम प्रेम – मृदु चारो |
एहि बिधि बेगि हरहु मेरा दुख कौतुक राम तिहारो ||४||

है स्त्रुति बिर्दित उपाय सकल सुर, केहि केहि दीन निहारै |
तुलसीदास यहि जीव रजु, जोइ बाँध्यों सोइ छोरै ||५||

शेख मुस्कान
(एम. ए. प्रथम वर्ष - हिंदी)

काँटों का प्रतिवेदन

हम तन के भले गरीब,
नहीं पर मन के हैं |
हम काँटें तो हैं लेकिन,
सखा सुमन के हैं |

हम आँधी को, तूफानों को सहते हैं,
फिर भी नफरत की दरिया में बहते हैं |
जग अमृत पीकर अमर रहे इस खातिर,
हम सदा कंठ में गरल लिए रहते हैं |
यह सही कि आग हमारे,
सिर पर नाच रही |
पर दिल तो हम सबके,
शीतल चंदन के हैं |

फूलों को हमने अमृत – दृष्टि से देखा,
बन गए सुरक्षा – हित हम लक्ष्मण – रेखा |
कपटी माली के हाथ न उन तक पहुँच सकें,
हर आने वाले क्षण का रक्खा लेखा |

औरों के सुख के लिए,
सदा जो दुख झेले |
हम तो भैया आदी,
ऐसे जीवन के हैं |

हम तो सदियों से भाई औढ़रदानी,
है बड़ी कठिन हम सबकी रही कहानी |
बचपन तो गाली सुनते – सुनते बीता,
अब दी है संघर्षों को सौंप जवानी |

पथिकों के आड़े समय,
काम हम ही आते |
हम नहीं धनी के धन,
हम तो निर्धन के हैं |
(पाँखुरी – पाँखुरी)

संकलित
चेतन विष्णू रवेलिया
(एम. ए. द्वितीय वर्ष - हिंदी)

मैं समझ गया अम्मा.....

"ऐसे नीचे गिरे फूलों को
मूर्ति पर अर्पित नहीं करते
क्यों करती है तू अम्मा ऐसा ?"
वह प्रसन्न तो न होगा
प्रकोप अवश्य करेगा
"तू क्यों करती है ऐसा
क्यों नहीं समझती
जरा – सी बात ?"
"तू क्यों नहीं समझता
बात जरा – सी ?"

"आज तूने फिर से
अम्मा..... रे"
पाप लगेगा
मत कर ऐसा
"तू क्यों नहीं समझती
जरा – सी बात ?"
"तू क्यों नहीं समझता
बात जरा – सी ?"

पेड़ से नीचे गिरे फूल होते थे अवश्य

पर माथे पर तो धरती के होते थे न !
मैं समझ गया अम्मा
खूब समझ गया.....!

चेतन विष्णू रवेलिया
(एम. ए. द्वितीय वर्ष हिंदी)

द्वंद्व ✍

क्या हो जब रोज
उगना सूरज का
चुनौती लेकर आए
भँवरजाल में उलझाकर
आधिव्याधि को और सताए ?

कैसे..... कैसे..... कैसे.....

प्रथम रवि किरण से
नवचेतना के दीप जलाएँ
स्वप्न के अंकुरित होने की
आभा से खिले और खिलाएँ ?

भाषा के अभाव में
संप्रेषण को गति दिलाएँ
अक्खड़ हिम के बवंडर में
मृदु सरिता को उपजाएँ ?

मटमैले पानी में
सतरंगी मछरी को सहलाएँ
भीतर की कोयल को
कर्म उसका ही स्मरण कराएँ ?

अभिन्न हिस्सा होकर
नाटक का मुकद्रष्टा बनें
चेतना को स्वयं की
सोने दें औरों को सुलाएँ ?

हाथों से स्वयं की
छाती को चिराएँ ?
अंबर की धरा पर होने का तारें उत्सव मनाएँ ?

जग के बंजर आँगन में
ह्रदयबीज गड़ाएँ, लता बढाएँ ?
यात्रा करें कैसे व्यष्टि,
जब समष्टि ही खल बन मार्ग अडाएँ ?

कैसे फार्म पर सहजता से
अँगूठा लगाएँ ?
स्वच्छ – सुंदर बागीचा हो कैसे
जब दीमक लगी हो फुलवारी में ?

बिवाईयाँ भरें कैसे
सोच की
जब मुझसे ही
परिभाषा है समाज की !

चेतन विष्णू रवेलिया
(एम. ए. द्वितीय वर्ष हिंदी)

जिंदगी ✍

☞ ऐ खुदा आज ये फैसला कर दे,
जिंदगी का कुछ गम अब तो कम कर दे |

☞ बहुत इंतजार किया है मैंने,
दुनिया में अपना अस्तित्व बनाना,
इस मुश्किल सफर को थोड़ा तो कम कर दे |

☞ जितनी दूर है मुझसे मेरी मंजिल,
उसे उतना ही करीब कर दे |

☞ नहीं लिखी अगर नसीब में कोई खुशी,
तो ये बताकर मेरी मुश्किल तो कम कर दे |

रेखा कुमारी
(एम. ए. द्वितीय वर्ष हिंदी)

जिंदगी ✍

छोटी सी जिंदगी
ख्वाब बहुत सारे हैं |
ये ख्वाब ही बन गए
हर एक के जीने के सहारे हैं |
करने अपने ख्वाबों को पूरा
सब भागते – दौड़ते रहते हैं |
पाने अपनी ख्वाबों की मंजिल,
जतन दिन – रात करते रहते हैं |
छोटी सी जिंदगी
ख्वाब बहुत सारे हैं |
यह ख्वाब ही बन गए
हर एक के जीने के सहारे हैं |
देख लेता है हर कोई ख्वाब
लेकिन कुछ ही उन्हें सच कर दिखाते हैं |
जिनके हौसलों में दम होता है
बस वहीँ अपने ख्वाबों को उड़ान
दे पाते हैं |
छोटी सी जिंदगी
ख्वाब बहुत सारे हैं |
यह ख्वाब ही बन गये
हर एक के जीने के सहारे हैं |

निधि विजय चौहान
(एम. ए. द्वितीय वर्ष - हिंदी)

➢ *"आदमी नहीं टूटता जल्दी,*
सब कुछ ही झेल लिया
सोख लिया करता है
जैसे धीरे – धीरे धरती पी लेती है सब पानी
बाढ़ का दुनिया की सबसे भयंकर उस बाढ़ का !"

- *अनामिका*

जरूरी है.....

ज़िंदगी की दौड़ में थोड़ा

थकना भी जरूरी है!

कुछ देर बैठकर बीते हुए लम्हों को

याद करना भी जरूरी है !

चाहे वक्त अच्छा हो या बुरा

उसे जीना भी जरूरी है !

दो पल के लिए आँख नम कर

मुस्कुराना सीख लेना भी जरूरी है !

थक कर इस ज़िंदगी से गिरकर सँभलना

और वापिस उठ खड़े होना भी जरूरी है !

आयशा काज़ी

(टी. वाय .बी. ए.)

इंसान अब हैवान लगता है

इंसानों से अब कुछ डर – सा लगता है,

यह मुझे हैवान – सा लगता है !

दिल घबरा – सा जाता है,

जब कोई अंजान आवाज लगाता है !

यह कुछ गलत – सा लगता है,

इंसान अब हैवान लगता है !

धर्म के नाम पर यह हमें बाँटता है,

हर पल कोई मासूम की जान लेता है

उन्हें तो अब उस खुदा से भी नहीं डर लगता साहब

जिसने उन्हें जन्म दिया है !

इंसान अब हैवान लगता है !

जिस देश में चींटी को मारना पाप माना जाता था

वहाँ इंसानों को कुचला और मसला जाता है

जब संख्या मौत की सौ से ज्यादा बढ़ जाती है,

तब हमें थोड़ा – सा एहसास होता है

इंसान अब हैवान – सा लगता है !

आयशा काज़ी
(टी. वाय .बी. ए.)

महिला – सबला या अबला ?

समाज दो हिस्सों में विभाजित हुआ है एक – पुरुष और दूसरा – महिला | अर्थात महिला और पुरुष दोनों एक सिक्के के दो पहलू माने जाते हैं | पुरुष प्रधानता भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के लगभग सभी समाजों में पुरुष की प्रधानता पाई जाती है |

महिलाओं के संदर्भ मे भारतीय समाज में दो प्रकार के दृष्टिकोण पाये जाते महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष मानता है | महिलाओं के प्रति दूसरा दृष्टिकोण महिलाओं को स अधिकार दिलाने का विरोधी है | इसी कारण से समाज में महिलाओं का शोषण किया जाता है |

भारतीय समाज में स्त्री का दूसरा नाम है– 'सबला' | परंतु वर्तमान में भारतीय समाज उसे 'अबला' बनाने पर तुला हुआ है | अभी हैदराबाद में एक प्रतिभावान चिकित्सक युवती के साथ समाज के बीच रहनेवाले दरिंदों ने जो कृत्य किया है, वह अत्यंत ही निंदनीय है | देश में कई बार ऐसी दिल दहला देनेवाली घटनाएँ सामने आती हैं और ऐसी घटनाओं का शिकार होती है हमारी देश की निरपराध बेटियाँ और महिलाएँ | ऐसी घटनाओं के कारण समाज में यह प्रश्न निर्माण होते है कि ऐसे वातावरण में किस प्रकार से बेटी की सुरक्षा की जाए? कैसे बेटी को पढ़ाया जाए ?

अगर हमारे देश की और हमारे समाज की ऐसी ही स्थिति रही तो निश्चित रूप से महिला को 'सबला' कहना युक्तिसंगत नहीं होगा |

इसलिए हमारे देश की सोच में परिवर्तन होना अनिवार्य है | अगर महिला को 'अबला' से 'सबला' होना है तो उसे अपने अधिकार के प्रति और अपनी सुरक्षा के प्रति जागरुक होना पड़ेगा | यदि महिलाएँ एकजुट हो कर साथ खड़ी हो जाएँ तो समाज में बहुत से वांछित परिवर्तन ला सकती हैं | किंतु पुरुष को भी उन्हें इस ओर प्रोत्साहित करना होगा | समाज को भी

अपनी सोच बदलनी होगी अन्यथा जल्द ही यह दुनिया अंत के समीप होगी | नारी को अबला समझने की भूल यह समाज पहले ही से करता आ रहा है जिसे अब सुधारने की आवश्यकता है |

डी. के. निवातियाँ की 'सबला नारी' नामक कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है:-

नहीं अब अर्थहीन अबला नहीं
एक सशक्त संपूर्ण सर्वस्व
वो पुष्प जिसकी खुशबू से
महकता है पूर्ण घर संसार
इसलिए संबोधन उचित है
अबला नहीं वो अब सबला नारी ||
है सबला नारी .....! सबला ||

अंत मे मैं यही कहना चाहती हूँ कि नारी अबला नहीं अपितु प्रेम, त्याग, मातृत्व और धैर्य की वह गंगा है जिसे लाँघना किसी के बस में नहीं | नारी के इन्ही गुणों के कारण उन्हें कमजोर समझने की भूल करना सबसे बड़ी बेवकूफी होगी | मैं उम्मीद करती हूँ कि लोगों को भी जल्द ही यह बात समझ में जाए | आखिर उम्मीद का ही तो दूसरा नाम जिंदगी है !

सुवर्णा हिवाळे
(एम. ए. प्रथम वर्ष हिंदी)

★ दोस्ती का महत्व ★

जब हम छोटे से होते है तो खेलने के लिए हमेशा अपनी उम्र के किसी दोस्त की जरुरत होती है | कॉलोनी में हमें कई तरह के मित्र मिलते हैं पर उनमें भी हमें कुछ खास लगने लगते हैं, जिनके साथ हमें खेलना अच्छा लगता है जिसे हमेशा हम अपने साथ देखना चाहते है | ये हमारी वो दोस्ती है जिसका पहला और आखिरी मतलब है 'खेल'| बचपन में मित्रों के साथ खेलना ही सबसे अधिक प्रिय और महत्वपूर्ण काम लगता है और उनके इस कार्य में जो सबसे अच्छे सहभागी है वह उसके खास दोस्त बन जाते हैं |

बच्चा जब बड़ा होता है तब यह समय उसकी जिंदगी का सबसे सुंदर समय होता है, जिसमें वह जिंदगी का सबसे अच्छा वक्त बिताता है लेकिन यही वो समय होता है जब एक बच्चा अपना भविष्य बनाता है या बिगाड़ता है | अगर दोस्त अच्छे मिल जाएँ तो भविष्य अच्छा बन जाता है और अगर बुरे दोस्तों की संगती मिल जाए तो भविष्य बिगड़ जाता है | इस समय दोस्ती का बच्चे की मानसिकता पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है | अच्छी एवं बुरी संगती बच्चे के पूरे जीवन को प्रभावित करती है | स्कूल एवं कॉलेज के दौर में एक बच्चे को दोस्ती की सबसे ज्यादा जरुरत होती है | पढाई के लिए, मनोरंजन के लिए यहाँ तक की मन में उठ रहे विचारों के लिए हमें हम उम्र साथी की जरुरत होती है | जरुरी नहीं दोस्ती केवल स्कूल, कॉलेज या गली मुहल्ले के हम उम्र के लोगों के बीच ही हो | आज के समय में सबसे करीबी दोस्त माता, पिता, दादा, दादी एवं भाई, बहन ही होते हैं | जब ये रिश्ते अपनी उम्र के अनुभव को छोड़ अपने बच्चों के साथ उनके जैसे बन जाते है | उन्हें खेल - खेल में सही - गलत समझाते है तब ये रिश्ते ही सबसे बेहतर दोस्त कहलाते हैं |

पूजा कुमारी
(एम. ए. प्रथम वर्ष हिंदी)

- लोकप्रियता कभी भी रचना का मानक नहीं बन सकती | असली मानक तो होता है रचनाकार का दायित्वबोध, उसके सरोकार, उसकी जीवन दृष्टि – मन्नू भंडारी

❖ यारी ❖

इसे कहानी कहूँ या जिंदगी का एक खुबसूरत सफर ! वैसे देखा जाए तो लड़कों की दोस्ती ज्यादा अच्छी मानी जाती है |पर यह तो लड़कियों की दोस्ती है | हम सभी को सदैव एक सच्चे दोस्त की तलाश होती है | ये रिश्ता ही बहुत प्यारा, पवित्र व अनमोल है | जब भी हम अपनी दोस्त को याद करते है चेहरे पर अच्छी वाली मुस्कान खुद ही आ जाती है| यह कहानी दो सहेलियों की है एक जो बहुत सुंदर व समझदार वहीं दूसरी उतनी ही शैतान और शरारती | इनकी दोस्ती की शुरुआत कॉलेज से हुई | साथ में रहना, पढ़ना, घुमना सबसे बेखबर और दुख –सुख से अंजान | इनके लिए रोज साथ में रहना ही सबकुछ था | यह रिश्ता ही ऐसा है बिना शर्त ही बढ़ने में सिर्फ खुशियाँ मिलती हैं | दोस्ती का ना तो कोई धर्म होता है या जाति होती है, यहाँ सिर्फ सबसे खुबसूरत यादें होती हैं | इंद्रधनुष के जैसे होते हैं ये दोस्त जो साधारण सी दुनिया में रंग–बिखेर जाते है | इन्हें कुछ बोलना नहीं पड़ता उससे पहले ही आपकी मुस्कुराहट ले आते हैं |

तृप्ती गुप्ता
(एम. ए. प्रथम वर्ष हिंद

- शब्द प्रकाश की वर्णमाला हैं - प्रकाश की पहचान का आदिसूत्र, बीजमंत्र| अँधेरे में रास्ता टटोलने के लिए जली दियासलाई – अनामिका

❖ भूख ❖

एक लड़का सात-आठ की वय का, बबूल के पेड़ के नीचे बैठा था | मेरी नजर उस पर और उसकी ऊपर बिजली के तारों पर थी | हाथ में उसके गुलैल थी | तार पर तीतर बैठा था | अब तीतर बचनेवाला नहीं था | फौरन लड़के को डाँट कर भगाना चाहा पर वह अंगद के पाँव की भाँति वहीं जमा रहा | फौरन पत्थर फेंककर तीतर कोमैंने उड़ा दिया | निश्चिंत होकर घर में आ गया|

चीं.. चीं.. चीं.. का क्रंदन, अविराम प्रलाप कानों से घुसकर सीधे हृदय हो बेधे जा रहा था | आवाजें रुकती नहीं, नहीं रुकती और बढ़ती जा रही थीं |बाहर आकर देखा तो वही लड़का नेवले को जाल में फाँसकर उस पर पत्थरों की वर्षा कर रहा था | एक पत्थर, फिर दूसराफिर तीसरा | नेवला खून से लथपथ होकर प्रयत्न - दर- प्रयत्न करता पर फाँसे से छूट न पा रहा था | आस–पड़ोस

की औरतें आगे बढ़कर कुछ करने से बेहतर समझकर गालियों समेत प्रश्नों की बौछार करतीं– कहाँ से आया है ?" "कहाँ का रहने वाला है ?" अच्छा, तो वह नेवले को पकड़ने का जाल बिछाकर तीतर का भी शिकार करना चाहता था | नेवले की मर्मभेदी चीखें पूरे वातावरण को घेरे जा रही थीं | बुद्धि को सुन्न कर हृदय पर हथौड़े जमा रही थीं | चारों ओर से लोग उसे चिल्लाने लगे | मुहल्ले भर के लोगों ने उसे खूब गालियाँ दीं कि उसे छोड़ दें पर वह संवेदना से कोसों दूर खड़ा था| चारों ओर से लोग उसे चिल्लाने लगे पर कोई उसके पास जाकर नेवले को छुड़ाने का प्रयत्न न कर रहा था कदाचित हृदय की अपेक्षा बुद्धि अधिक सक्रिय हो उठी थी सभी की | एक व्यक्ति के उसे पूछने पर कि "क्या करेगा इसका?" वह उत्तराया 'खाऊँगा' !

चेतन विष्णू रवेलिया

(एम. ए. द्वितीय वर्ष हिंदी)

एल. जी. बी. टी

समलैंगिकता का अस्तित्व सभी संस्कृतियों और देशों में पाया जाता है | यद्यपि कुछ देशों की सरकार इस बात का खंडन करती है | पश्चिमी देशों की तरह भारत के कई हिस्सों में भी समलैंगिक रिश्ते हुए विवाह की खबरे आती रहती हैं | छत्तीसगढ़ में संभवतः पहला समलैंगिक विवाह सरगुजा में जिला अस्पताल की नर्स तनुजा चौहान और जया वर्मा ने रचाया था | इसे देश में समारोह पूर्वक समलैंगिक विवाह का प्रथम मामला बताया जाता हैं | २७ मार्च २००१ को दोनों ने वैदिक रीति से विवाह किया था |

भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने इस धारा का प्रयोग उन कार्यों के लिए असंवैधानिक घोषित कर दिया | जिनमें दो वयस्क परस्पर सहमति से दो वयस्कों के बीच समलैंगिक आचरण करते हैं | ६ दिसंबर २०१८ को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने धारा ३७७ (भारतीय दंड संहिता)को असंवैधानिक घोषित कर दिया गया| धारा ३७७ को निरस्त करने के आंदोलन का नेतृत्व नाज फाउंडेशन ट्रस्ट एक गैर सरकारी संगठन (इंडिया) ने किया था | जिसने २००१ में दिल्ली उच्च न्यायालय में एक मुकदमा दायर किया था | जिसमे सहमति प्राप्त वयस्कों के बिच समलैंगिक संबंधों को वैध बनाने की मांग की गयी थी |

११ दिसंबर २०१३ को सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को अमान्य कर दिया जिसने धारा ३७७ को हटा दिया था जिसमें कहा गया की न्यायपालिका इस धारा को नहीं हटाएगी | इसे हेतु इसे संसद में पारित किया जा सकता है |

कुछ लोग जहाँ समलैंगिकता को गलत ठहरा रहे हैं तो कही कुछ लोग इसे सही मानते हैं | कुछ का कहना यह है कि यह असभ्य तथा प्रकृति के खिलाफ है | क्या हमें इस बात पर कुछ भी खेद नहीं होना चाहिए ? क्या दो लोगों का साथ में रहकर खुश होना या रहना गलत है ? जबसे पृथ्वी का निर्माण हुआ है और मनुष्य अस्तित्व में आया है तबसे लेकर आज तक प्रकृति में बहुत सारे बदलाव आए हैं और सबसे ज्यादा बदलाव तो हम मनुष्य में आये हैं | पहले मनुष्य तो चार पैरों पर चलता था तथा बिना कपड़ों के जीवन यापन करता था | धीरे - धीरे मनुष्य चार पैरों से दो पैरों तथा शरीर को ढंक कर रहने लगा | जहाँ आदिमानव जंगलों में रहकर कंदमूल खाता था वहीं आज १५ से २० मंजिली इमारत में रहता है तथा पिज़्ज़ा , बर्गर खाता है | पहले जहाँ मनुष्य पैदल यात्रा करता था वहीं आज वाज हवाई जहाज से सफर करने लगा |

समय के साथ बदलाव भी बहुत जरुरी है| भारतीय संविधान में अनुच्छेद २१ में जहाँ मौलिक स्वतन्त्रता का अधिकार सभी को दिया हुआ है, तो दूसरे के घरों में झाँकने की जरुरत नहीं है| जबकि सामनेवाली व्यक्ति ने हमें कोई दुःख या तकलीफ न पहुँचाई हो | अगर वह अपने व्यक्तिगत जीवन में खुश है तो हमें कोई भी अधिकार नहीं है किसी के बारे में कुछ भी कहने का |

बदलाव कोई भी हो पहले वह गलत ही लगता है| जैसे चाहे वह सती प्रथा -विधवा विवाह या फिर ट्रिपल तलाक जैसी कुरीतियाँ हो | लोगों का कहना था कि यह हमारे संस्कृतियों के विरुद्ध है| पर हमें आज उन कुरीतियों के ख़त्म होने पर गर्व महसूस होता हैं | उसी तरह से अगर दो व्यक्ति इंसान अगर आपस में खुश हैं तो हमें किसी भी तरह की परेशानी नहीं होनी चाहिए | मनुष्य की जिंदगी में बदलाव सभी अच्छे होते हैं| पर हम उस बदलाव को समझते देर से हैं| आज जिस बदलाव को हम असभ्य और प्रकृति के खिलाफ मान रहे हैं आनेवाले कल में हमें इस पर भी गर्व महसूस होगा |

शेख सबीना
(एम. ए. द्वितीय वर्ष हिंदी)

मानवता का अंत

एक गाँव में इंस्पेक्टर महेश सिंह का घर था | वह वहाँ अपने सारे परिवार के साथ बड़े आनंद से रहता था | महेश सिंह स्वभाव से बड़ा ही प्रसन्नचित इंसान था | महेश सिंह को अपने देश से अत्यंत लगाव था और इस नि:स्वार्थ प्रेम को सही दिशा देने के लिए ही ग्रेजुएशन के बाद पुलिस फर्म जॉइन कर लिया था | तभी कोरोना वायरस ने अपना कहर दिखाया और सारे विश्व में तबाही मचा दी | और जल्द ही हमारा देश भी इस वैश्विक महामारी की चपेट से ग्रसित हो गया | तभी हमारे देश में भी प्रथम लॉकडाऊन मार्च के महीने में लगा | इंस्पेक्टर महेश सिंह भी कोरोना की तबाही को रोकने के लिए पूरी तरह से तैयार थे | जहाँ सब ओर लोग घर के बाहर भी नहीं निकलते वहीं इंस्पेक्टर सिंह टीम के सदस्यों के साथ मिलकर बिना डरे हर गली मुहल्लेमें जरूरतमंद की सहायता करने में तप्तर रहते थे | कोरोना का कहर इतना था कि सभी तरफ लोग डरे हुए थे | हर तरफ बस निराशा और दुःख के बादल छाए हुए थे| मानव जिंदगी सबकी रुक सी गयी थी और लोग मुस्कुराना भूल गए थे | इस इंस्पेक्टर महेश सिंह और उनकी पूरी टीम शहर में अलर्ट जारी कर बिना रुके कोरोना के प्रति लोगों में जागरूकता फैला रहे थे और हर मुमकिन कोशिश कर रहे थे, कोरोना को हराने की | और इस तरह कहीं न कहीं सबके प्रयास से कोरोना को हराने में सभी सफल होंगे ही होंगे | इस तरह बीते समय के साथ जब प्रथम लॉकडाउन हटाया गया तब सबके चहरे पर थोड़ी मुस्कराहट आयी और हमारी सरकार ने महेश सिंह और उनकी टीम को सम्मानित किया क्योंकि वह सभी निरंतर कठिनाइयों से जूझते हुए कोरोना के खिलाफ अपनी जंग जारी रखे थे| इतने समय पश्चात महेश सिंह छुट्टी लेकर अपनों के पास अपने गाँव आये | लेकिन ये क्या हुआ ? जब इंस्पेक्टर महेश सिंह गाँव के अंदर प्रवेश किए तो आसपास के लोग जो गाँव में रहते थे वह सब इंस्पेक्टर महेश सिंह को वहाँ से चले जाने के लिए बोल रहे थे | वो भी यह कहते हुए क्या किया हो-बाहर से आए हो ना जाने क्या ...? कितने मरीजों के संपर्क में आए होंगे ? क्या पता तुम्हे भी कोरोना हुआ हो ?

यह सुनते ही इंस्पेक्टर महेश सिंह कीआँखों में जो चमक थी अपनों से मिलने की वह गायब हो गयी | वे मायूस और हताश से हो गए | मानो दुःख के भँवर में डूब गए और उनके अंतर्मन से एक ही प्रश्न उठा (मनुष्य) क्या हम - सच में इतने संवेदनहीन हो गएहैं ?

तृप्ति गुप्ता
एम. ए. द्वितीय वर्ष

अदृश्य दानव

'कोरोना' यह कौन सा मायावी राक्षस है जो दिखता तो नहीं है और तो और दादी नानी की कहानियों में भी इसके बारे में नहीं सुना हमने| कोरोना नामक मायावी राक्षस ने तो हम सब को एक दूसरे से दूर कर दिया-| पहले हम किसी पर भी स्नेह लुटाते थे तब बदले में हमें भी उससे दुगुना स्नेह मिलता था | लेकिन इस कोरोना मायावी राक्षस के कारण स्पर्श तो मानो नागासाकी में हुए धमाकों से भी ज्यादा तबाही वाला प्रतीत होता है| यह कैसा अदृश्य शत्रु है जो मानव का अंत करने आया है| सुनने में आया हैकि यह मायावी राक्षस चीनी महानगरी से आया है और आते ही पूरी दुनिया में अपनी माया फैला दिया | कहीं यह प्रकृति का प्रकोप तो नहीं ? क्योंकि हम मनुष्यों ने प्रकृति को बहुत हानि पहुंचाई है| खैर, यह मायावी राक्षस ने तो हमारे रिश्तों मे भी दूरियाँ ला दी हैं | इसके प्रकोप के कारण हम अपने प्रियजनों से दूर हो गए हैं | इस मायावी राक्षस की भय से हमने अपनी संवेदना और प्रेम का (कोरोना) अंत कर दिया| १ साल से अधिक समय हो गया है, लॉकडाउन हुआ और इस मायावी राक्षस (कोरोना वायरस) ने हमारे जीवन में ग्रहण लगा दिया | सबकी जिंदगी रुक सी गयी | सब कुछ बदल सा गया |

)इसने तो मासूम बच्चों को भी नहीं छोड़ा हैं | जो बच्चे लोग बाग़ बगीचे-, गली मोहल्ले और मैदानों की सैर सपाटे करते थे-, हर त्योहारों की रौनक हुआ करते थे | आज भी सभी बस घरों में सिमट रह गए हैं | और तो और इस मायावी राक्षस ने बुजुर्ग व्यक्तियों पर भी तनिक दया नहीं आयी| उन पर भी अपना प्रकोप दिखा दिया |

लेकिन कोई भी संकट इतना बड़ा नहीं हो सकता की उसका समाधान ना हो सके | हम सभी मिलकर इस मायावी राक्षस को हरा देंगे | क्योंकि...

" जहाँ चाह है, वहाँ राह है "

तृप्ति गुप्ता
एम. ए. द्वितीय वर्ष

वैश्विक महामारी - कोरोना वायरस

"अच्छा स्वास्थ्य ही जीवन का

सबसे बड़ा उपहार है|"

अर्थात हमारे जीवन में स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूँजी है | अगर स्वास्थ्य अच्छा है तो सब अच्छा है, नहीं तो कितना भी पैसा हो वह सब बेकार है | इसलिए स्वास्थ्य ही जीवन का सबसे बड़ा आधार है |

कहा जाता है कि,

"पहला सुख निरोगी काया"

अर्थात जीवन में प्रथम सुख अगर है तो वह है निरोगी शरीर | यदि आप स्वस्थ हैं तो ही आपका जीवन है| अस्वस्थ शरीर में जीवन नहीं होता |

बीमारी के कई कारण हो सकते हैं, जैसे - मौसम, वातावरण, संक्रमण रोग, दूषित भोजन, खाने - पीने की गलत आदतें, चिंता, क्रोध, अनिद्रा आदि | वर्तमान में अस्वस्थ काया के लिए एक विषाणु (वायरस) को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है | एक वायरस जिसने पूरे संसार को अपनी चपेट में ले रखा है| एक ऐसा वायरस जिसे पहले कभी नहीं देखा गया और इस वायरस का नाम है 'कोरोना वायरस'| यह विषाणु वर्तमान में संपूर्ण मानव - जाति के लिए सबसे खतरनाक दुश्मन बना हुआ है | यह एक अदृश्य शत्रु है, जो बिना दिखे मानव को अपना शिकार बना लेता है| इसे कोविड - 19 के नाम से भी जाना जाता है| संपूर्ण भारत वर्ष वर्तमान में इसकी दूसरी लहर की चपेट में है| इस वायरस ने अनेकानेक मनुष्यों को असमय काल का ग्रास बना दिया है | इसने अर्थव्यवस्था को नष्ट करके गरीबी और बेरोजगारी में बेतहाशा वृद्धि की है | इस वायरस के आगे अमेरिका , डब्लू. एच. ओ . और अन्य विकसित देश भी बेबस दिखते हैं | कोविड - 19 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी घोषित किया है| इसका संक्रमण बहुत जल्दी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है इसलिए इस वायरस से बचाव के लिए सरकार द्वारा सावधानी बरतने की सलाह दी जा रही है | कोविड -19 का संक्रमण सबसे पहले चीन के वुहान शहर में दिसंबर २०१९ को हुआ था |

- **कोरोना के लक्षण : -**

कोरोना होने पर पहले बुखार होता है | इसके बाद सूखी खाँसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है | इसके गंभीर मामलों में न्यूमोनिया, सांस लेने में ज्यादा परेशानी, ऑक्सीजन लेवल कम हो जाना यहाँ तक की मृत्यु भी हो सकती है | सामान्य से दिखनेवाले लक्षण बीमार तथा बुजुर्गों पर ज्यादा घातक परिणाम दिखा रहे हैं |

- **कोरोना वायरस के संक्रमण होने पर बचने के उपाय :-**

इस बीमारी के लक्षण दिखते ही इम्युनिटी बढ़ाने और संबंधित लक्षणों के आधार पर दी जानेवाली बीमारियां और पौष्टिक आहार के द्वारा नियंत्रित करने के प्रयास हो रहे हैं | जब तक आप स्वस्थ न हो पाएं, तब तक दूसरों से अलग रहें | स्वास्थ्य मंत्रालय ने भी इससे बचने के कुछ दिशा - निर्देश दिए हैं | जैसे - साबुन से हाथ धोऐं, हाथ सैनिटाइज करें, मास्क का प्रयोग करें और दूरी बनाए रखें |

❖ **संक्रमण रोकने के उपाय :-**

कोविशील्ड और कोवैक्सिन यह दो टीके कोरोना वायरस का संक्रमण रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाया गया सबसे प्रभावशाली कदम रहा हैं | इन दो टीकों के द्वारा कोरोना वायरस को काफी हद्द तक हराया जा सकता है | इसलिए भारत की जनता को चाहिए कि वह नजदीकी आरोग्य केंद्रों में जाकर अपना टीकाकरण करवाएँ | यह कदम हमें कोरोना जैसी महामारी से दूर ले जा सकता है | अतः इस बीमारी से बचने के लिए जागरूकता और समझदारी जरूरी है |

जब अच्छे दिन स्थाई नहीं हैं तो बुरे दिन भी बीत जाऐंगे | हमें बीमारी से लड़ना है बीमार से नहीं |

"ऐसा समय जरूर आएगा |
कोरोना हमसे हार जाएगा || "

सुवर्णा हिवाळे
(एम. ए. प्रथम वर्ष हिंदी)

➢ *ये समझ लेना कि आप नहीं समझ रहे हैं गुण है, ये नहीं समझ पाना कि आप नहीं समझ रहे हैं दोष है |*
- लाओत्से

➢ *कुछ न कुछ कर बैठने को ही कर्तव्य नहीं कहा जा सकता | कोई समय ऐसा भी होता है, जब कुछ न करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य माना जाता है |*
- रवींद्रनाथ ठाकुर

➢ *चाहे धैर्य थकी घोड़ी हो परंतु फिर भी वह धीरे – धीरे चलेगी अवश्य |*
- शेक्सपियर

➢ *जिंदगी हमारे साथ खेल खेलती है, जो इसे खेल नहीं मानते, वे एक – दूसरे की शिकायत व आलोचना करते हैं |*
- जैनेंद्र कुमार

स्मृतियाँ

(हिंदी विभाग के पूर्व विद्यार्थियों के अनुभव)

* मेरे जीवन के कुछ खुशी के पल *

जिस माध्यमिक स्कूल में मैं दसवीं कक्षा में फेल हुआ | आज उसी स्कूल के उच्च माध्यमिक विभाग में हिंदी अध्यापन का कार्य कर रहा हूँ |

यह प्रेरणा और विश्वास मुझे अहमदनगर महाविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद यहाँ के अध्यापकों ने दी | मुझे आज भी 11 वीं कक्षा से लेकर एम.ए. कक्षा तक जिन महानुभावों ने पढ़ाया उन सभी प्राध्यापकों के नाम मुझे याद हैं | यह याद रहने की वजह ही ऐसी है कि इन सभी लोगों ने हमारे अंदर के गुण और कला को जानकर मार्गदर्शन किया |

मुझे ज्यूनिअर कॉलेज में रफिया शेख मैडम ने पढ़ाया था | उसके बाद महाविद्यालय के स्तर पर हर्दवानी सर, शर्मा मैडम, ठोंबरे सर, टेमक सर, भारदे सर, गोरे मैडम, चव्हाण सर इन सभी अध्यापकों ने मुझे बहुत ही प्रेरणादायक और विश्वास भरा ज्ञान दिया, इसी कारणवश आज मैं अपने पैंरो पर खड़ा हूँ | मैं इन सभी अध्यापकों के प्रति ऋण व्यक्त करना चाहता हूँ |

आज हिंदी विभाग में डॉ ऋचा शर्मा मैडम, चव्हाण सर इनके साथ दळवी मैडम, घोरपडे सर, और मेरे परम मित्र त्रिपाठी सर कार्य कर रहे हैं | इन सभी के कारण आज हिंदी विभाग का पुणे विश्वविद्यालय में आदरपूर्वक नाम लिया जाता है | इसलिए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करना चाहता हूँ |

हिंदी विभाग की ओर से जब भी राज्यस्तरीय तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाता था तब हम सब विद्यार्थी उस समय पूरी मेहनत और लगन के साथ उस कार्यक्रम में जुड़ जाते थे | यह प्रेरणा हमें हिंदी विभाग के सभी अध्यापकों ने दी थी | इसी कारणवश आज हमें अपने कॉलेज में किसी भी कार्यक्रम का नियोजन करने में परेशानी नहीं होती |

हर व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे पल आते हैं जिन्हें हम मरते दम–तक नहीं भूलते | इसी तरह मेरे जीवन में भी वे पल 2006 में आए जब हम राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए सतना, मध्यप्रदेश में गये | उस समय हम पाँच विद्यार्थी और तीन विद्यार्थिनियों पर विश्वास रखकर शर्मा मैडम हमें लेकर गये थे | उस समय हमारे साथ पुणे विश्वविद्यालय के तत्कालीन अध्यक्ष मा. डॉ. टी. आर. पाटील सर भी थे | अहमदनगर से सतना तक की यात्रा वर्णन मेरे जीवन की एक अनमोल स्मृति है | इसे मैं जिंदगी भर नहीं भूल सकता |

हिंदी विभाग मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है | इसी कारणवश कभी भी किसी भी कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा तो उसमें मैं पूरी तरह से सहयोग देने का प्रयत्न करूँगा |

श्री नजान सोमनाथ मुरलीधर
(एम. ए. बी. एड.)
(फिरोदिया उच्च माध्यमिक विभाग में कार्यरत)

अगर अहमदनगर महाविद्यालय नहीं होता.....?

अहमदनगर महाविद्यालय हजारों युवाओं को ज्ञानदान का पवित्र कार्य करनेवाली प्रेरक भूमि है | सौभाग्य से मैं भी पैंतालीस साल पूर्व इसी महाविद्यालय का छात्र रहा हूँ |

उस समय महाविद्यालय में जब मेरा दाखिला हुआ था तब लगभग ढ़ाई महीने तक मैं अपने घर ही नहीं आया | इससे चिंतित होकर मेरे पिताजी मुझे मिलने हेतु सीधे महाविद्यालय पहुँचे | तत्कालीन प्राचार्य बार्नबस साहब ग्रंथालय के सम्मुख खड़े थे | उन्होंने पिताजी को पास बुलाया किंतु वे मराठी समझ नहीं पाए इसलिए उन्होंने चपरासी को बुलाया | सभी पूछताछ अत्यंत सदाशयता के साथ करायी | पिताजी मात्र मेरा नाम ही बता सके | उन्हें न मेरी संकाय की जानकारी थी और न ही कक्षा की | लेकिन प्राचार्य बार्नबसजी ने चपरासी को मुख्य द्वार पर खड़ा किया हर लड़के से अपना नाम बताने को कहा और उसी समय मेरी पिताजी के साथ मुलाकात हो पायी | सचमुच, क्या कोई प्राचार्य आजकल ऐसी चिंता कर सकता है ?

इसी परिप्रेक्ष्य में मुझे और एक प्रसंग याद आता है | मेरे मित्र श्री.बागडे ने,(तब बागडपट्टी, नगर में रहते थे) जो आजकल जामखेड में रहते हैं | उन्होंने 'वार्षिक स्नेह सम्मलेन' में विविध गुणदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत 'वारकरी दिंडी' में मुझे संत तुकाराम की भूमिका निभाने के लिए आग्रह किया जिसमें मेरे मित्र प्रा.विश्वास आष्टेकर (वाडिया कॉलेज पुणे) श्रीमती मेहेर(उस समय अविवाहित थी) नामदेव राऊत(कर्जत) आदि ने हाथों में करताल, तुलसी वृंदावन सिर पर धारण कर पताका फहराते हुए 'वारकरी दिंडी' का आयोजन किया | मैं अब भी भूला नहीं हूँ, उस वक्त हमें द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था | तब मुझे 'पाऊले चालती पंढरीची वाट, सुखी संसाराची सोडूनिया गाठ' अभंग दिया गया था | इस अभंग को लेकर मेरी प्रस्तुति भी अच्छी एवं सराहनीय रही | उस वक्त मैंने कभी सोचा भी नहीं था ऐसे ही पैदल 'दिंडी' में शामिल होने का अवसर प्राप्त होगा |लेकिन सौभाग्य से 45 वर्ष बाद जंगले महाराज शास्त्री डोंगरगण ता. अहमदनगर के साथ 'वारकरी दिंडी' में पैदल जाने का अद्भुत अनुभव मुझे मिला है | सचमुच, अहमदनगर से पंढरपुर तक ग्यारह दिनों तक पैदल यात्रा का अनुभव मेरे लिए अत्यंत हर्षदायी है | संयोग से उसी वर्ष जंगले महाराज शास्त्री के मठ की स्थापना पंढरपुर में होनेवाली थी | इस बात का उल्लेख मैंने अपने उद्घाटन भाषण में भी किया था जिसकी प्रशंसा सभी ने जोरदार तालियाँ बजाकर की थी |

इस संदर्भ में मैं डॉ. आडकर जी का उल्लेख अत्यंत विनम्रता एवं आदर के साथ करना चाहता हूँ | डॉ. आडकर जी उस समय हिंदी विभागाध्यक्ष थे| दरअसल मैं उन्हीं के कारण हिंदी प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, तथा उपप्राचार्य के पद तक पहुँच सका| मुझे याद है कि हिंदी विशेष में स्नातक उत्तीर्ण करने के पश्चात अहमदनगर जिले में स्नातकोत्तर अध्ययन की कहीं भी सुविधा नहीं थी | परिणामत: मैंने संगमनेर तहसील के पेमागिरी गाँव की पाठशाला में अध्यापक की नौकरी आरंभ की | हालांकि इसमें प्राचार्य आगळे जी (नेवासा) विधायक दौलतराव पवार (श्रीरामपुर) गिरधर पा. तुवर और बी.के.पाटील सर (पचेगांव) आदि का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है | दो महीनों तक अध्यापक की नौकरी करता रहा | एक दिन आकस्मिक रूप से डॉ. आडकर जी का पत्र मिला | उन्हें मेरा पता कहाँ से मिला, मैं नहीं जानता | लेकिन पत्र में उन्होंने लिखा था कि "हमारे महाविद्यालय को स्नातकोत्तर हिंदी कक्षाओं के लिए अनुमति प्राप्त हुई है|आप होनहार छात्र रहे हैं | हमें पाँच छात्रों की जरूरत है | आप अपना प्रवेश सुनिश्चित कर सकते हैं | इस अध्ययन के दौरान आपको केंद्र सरकार द्वारा अहिंदी प्रदेशों को दी जानेवाली छात्रवृत्ति रु.1200 भी दी जाएगी | इसके अलावा 'स्वतंत्र अध्ययन परियोजना' अंतर्गत मैं आपको हर सत्र में 200 रु. अर्थात वर्ष के 400 रु. मानदेय के रूप में वितरित करूँगा |" उनका पत्र पढ़कर शीघ्र ही मैंने नौकरी से इस्तीफा दिया | स्नातकोत्तर हिंदी में दाखिला कराया | मुझे छात्रवृत्ति और मानदेय भी प्राप्त हुआ| मैंने सत्तावन प्रतिशत अंक लेकर स्नातकोत्तर अध्ययन पूरा किया |

मुझे स्मरण है कि डॉ.आडकर जी ने दीवाली और गर्मी के अवकाश में अध्ययन परियोजना के अंतर्गत मुझे 'प्रेमचंद: एक उपन्यासकार' विषय दिया था| वह प्रबंध मैने पूरा किया,जिसकी एक कापी अभी भी मेरे पास पूँजी के रूप में संकलित है | वाकई मुझे लगता है आजकल छात्रों को पत्र भेजनेवाला, आर्थिक मदद करनेवाला, एम. ए. पूरा करने हेतु हर स्तर पर सहायता करने वाला कोई अध्यापक है ? और है भी तो कितने ?

प्रा. डॉ. मुहम्मद आजम जी ने भी मुझे पी.एच.डी. अनुसंधान हेतु 'हिंदी–मराठी नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन'(1931 से 1965) विषय दिया था | इस शोध अध्ययन हेतु ग्यारह अध्याय बनाये गए थे | जिनमें से पांच अध्याय सर ने

जाँचकर भी दिए थे | छह अध्याय शेष थे | आगे चलकर मेरा तबादला शेवगाँव महाविद्यालय में हुआ | परिवार, गृहस्थी और संस्था द्वारा दी गई जिम्मेदारियाँ निभाते हुए पी.एच.डी का सपना अधूरा ही रहा | लेकिन मैं डॉ. आजम सर का मार्गदर्शन कभी भी नहीं भूल सकता | स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन हेतु प्रा. लछमन हर्दवाणी सर आए थे | साथ ही नाट्य क्षेत्र में और बड़े पर्दे पर भी जिन्होंने अपने अभिनय की अमिट छवि हमेशा बनायी है, उनमें प्रा. मधुकर तोरडमल (अंग्रेजी) तथा स्व. सदाशिव अमरापुरकर जी का अभिनय भी बहुत नजदीक से देखने का सुअवसर हमें यहीं प्राप्त हुआ है | स्वतंत्र अध्ययन परियोजना अंतर्गत जब मेरा चयन हुआ तब मुझे ग्रंथालय में अध्ययन करने के लिए स्वतंत्र कक्ष भी मिला था | जिससे कोई भी किताब पढ़ने के लिए आसानी से उपलब्ध होती थी | स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की प्रथम बैच (1971–73) का मैं छात्र रहा हूँ | हमारी बैच में सात लड़के और दो लड़कियाँ और तीन प्राध्यापक तथा अतिथि प्राध्यापक चितळेसर आदि थे | मुझे अतीव हर्ष है कि हम सभी इस बात के साक्षी रहे हैं |

अंत में, मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि मेरे जीवन में प्राध्यापक और उपप्रधानाचार्य या फिर हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में जो पड़ाव आए हैं, वह सब डॉ. आड़कर जी एंव अहमदनगर महाविद्यालय तथा हिंदी विभाग की ही देन है | यह महाविद्यालय हमेशा छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रतिबद्ध रहा है | मेरे जीवन में हिंदी विभाग का अहम् स्थान है "अत: मैं हमेशा ही विभाग के ऋण में रहना ही पसंद करुंगा क्योंकि हिंदी विभाग के कारण ही मैं अपने जीवन में अभिमान और गौरव महसूस करता हूँ | मुझे लगता है शैक्षिक जीवन में इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है ? उन स्वर्णिम पलों को जब भी मैं याद करता हूँ तब मैं अत्यंत प्रसन्नता महसूस करता हूँ|

प्रा. परशुराम रंगनाथ गणगे
(अध्यक्ष एवं उपप्राचार्य शेवगाँव
(P. G. –1st Batch – 71- 73)

* 42 साल पहले के दिन याद आए *

जिंदगी ने आज फिर एक बार नया मोड लिया | 42 साल पहले के दिन याद आए | जवानी की कश्मकश में बिजी था | भाग दौड चल रही थी | साल 1972–73 और 1973–74 पूरे दो साल संक्रमण के सिध्द हुए | सुबह 7:30 बजे छात्र बनकर अहमदनगर महाविद्यालय में उपस्थित होना, बाद में 11:30 बजे अध्यापक की हैसियत से हायस्कूल पहुँचना, फिर शाम में 7 बजे तक छात्रों के मैदान पर ट्रेनिंग देना और शाम 7:30 से 10:30 तक नाईट हायस्कूल में पढ़ाना..... यह सिलसिला जारी था | अध्ययन–अध्यापन, कठोर तपस्या चल रही थी | यारों की जिंदादिली, प्राध्यापकों की मेहर नजर और कॉलेज की हमदर्दी से ही मेरी नैया किनारे लगी....मेरा एम.ए. द्वितीय वर्ष हो गया|

प्रा. डॉ. आडकर साहब...सन्यस्त व्रतधारी पितृतुल्य आदर्श अध्यापक थे| कभी भी आप ने कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं किया | छात्रों से हमेशा मृदु शब्दों का ही प्रयोग करते थे | अध्यापन में मनोविनोद करना हो तो पहले ही कुछ मुस्कुराते थे और अपनी हँसी छुपाने के लिए किताब होठों पर लगा लेते थे | रहमदिल इन्सान थे| आप की स्मृति में छात्रों ने तथा स्नेही जनों ने ट्रस्ट भी स्थापित किया |

प्रा. डॉ. मुहम्मद आजम सर राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वान है| आप सूफी संप्रदाय के जानेमाने साहित्यिक हैं| छात्रों से स्नेहभाव इस प्रकार का था कि विद्यार्थी सर झुकाए आज भी उन्हें प्रणाम करते हैं | शेरो - शायरी

के साथ मनुष्य जीवन से संबंधी उदाहरण देते हुए आप पढ़ाते थे | मैं आप का प्रिय विद्यार्थी हूँ| मेरे अमृत महोत्सव समारोह में आप विशेष अतिथि थे | मंच पर उपस्थित थे | प्रा. डॉ. हर्दवाणी सर की विशेषता यह रही कि उस समय आप युवा थे नाटक विधा पढ़ाते थे | हम दोनों का एक बडा ही सुंदर रिश्ता रहा | पहले वे मेरे विद्यार्थी थे और बाद मैं उनका विद्यार्थी हुआ |

सर से उम्र में कई विद्यार्थी बड़े थे | पर सब उनका आदर करते थे और सर भी सबसे बड़ी विनम्रता से बातें करते | खुद नाट्य कलाकार थे तो नाटक विधा गहराई से पढ़ाते थे | सिंधी – हिंदी– मराठी का शब्दकोष आपकी बडी उपलब्धि रही|

प्रा. हेमंत गोखले सर ने मुझे वक्तृत्व के संबंध में बहुत मार्गदर्शन किया| बेलगाँव, पुणे, नगर तथा अन्य स्पर्धाओं में उन्ही के कारण हम कई करंडक प्राप्त कर सकें |

अहमदनगर महाविद्यालय के मुझ पर एहसान हैं | आदरणीय प्राचार्य स्व. टी. बार्नबस साहब, उपप्राचार्य स्व. घासकड़बी साहब, स्व. मंगलसिंग ठाकूरसाहब, कार्यालय अधिकारी स्व. लोखंडे साहब सबने मुझे ढेर सारा प्यार दिया | नौकरी करते हुए मैं पढ़ना चाहता हूँ, इसे गौर करते हुए मुझे फीस में भी सहूलियत दी गई थी | महाविद्यालयीन वाद-विवाद स्पर्धाओं में महाराष्ट्र में मैं हमेशा प्रथम या द्वितीय पारितोषिक का हकदार रहा | वक्तृत्व में भी मुझे कॉलेज का मार्गदर्शन प्राप्त होता था | आज आप ने हमें याद किया, बड़ा सुकून मिला | मैं आप सभी का तथा कॉलेज का एहसानमंद हूँ |

किस्मत में लिखा क्या था ?
पता नहीं, पर
अदब से गुजरी जिंदगी और
चाहता रहा मुझे जमाना
जो कुछ आज खडा हूँ, मैं दुनिया में
सीख पाया हूँ इसी कॉलेज में |

प्रा. मधुसूदन मुळे

सत्तर साल पुराना –

अहमदनगर कॉलेज और खासकर पचास साल पूर्व खुला हुआ नया हिंदी विभाग हम जैसे अनेक विद्यार्थियों का हितैषी बन खड़ा हुआ था | गाँव में किसानी से जूझते हुए परिवारों में न कोई मार्गदर्शक थे न पढ़े लिखे पालक थे | वहाँ की स्कूली प्राथमिक शिक्षा, बिना दिवारों के विशाल आसमान या पेड़, पौधों की छत, गाँव में हमारी सातवीं कक्षा तक की पढ़ाई हुई | अपनी अपनी हैसियत से गुरुजनों ने उनके पास जो कुछ ज्ञानरूप में था भरसक देने का प्रयास किया | पर आगे की पढ़ाई हाईस्कूल न होने के कारण अंधकारमय थी | घरवाले भी रोजमर्रा की कठिनाइयों और पारिवारिक संघर्ष करते हुए गुजारा कर रहे थे| किसानों के घर कितने भी बच्चे हों सभी खेती के लिए काम आते थे| बाहरी पढ़ाई का खर्चा घरवाले भी ढ़ोना नहीं चाहते थे | वातावरण ही इर्द-गिर्द का एक जैसा था | कुछ गुरुजनों का मार्गदर्शन मिला, घरवालों ने मान लिया और हम अहमदनगर एज्युकेशन सोसायटी हायस्कूल द्वारा चलाये गये हायस्कूल में अहमदनगर में भर्ती हुए| हायस्कूल बस स्टैंड के करीब था, डिब्बे लाने-रखने की सुविधा थी | कम खर्च में घर का खाना मिलने की संभावना देख कुछ साथियों के साथ हमने आठवीं कक्षा में प्रवेश किया | वहीँ से हमारा संघर्ष शुरू हुआ | मर्यादित खर्चे में हम गुजारा करते रहे | हायस्कूल में भी अच्छे अध्यापक मिले, वातावरण भी पूरक रहा हम कक्षा दर कक्षा आगे बढ़ते रहे | नये-नये विषय तथा नूतन अध्यापकों का ज्ञानवान सानिध्य हमारी शिक्षा की रूचि बढ़ाता ही रहा, हम असुविधाओं को ही सुविधाओं में बदलते हुए या कुबूल करते हुए तरक्की करते रहे | इसी दरम्यान नवीं क्लास से हमें एक सज्जन

तथा सदगुरु का सानिध्य प्राप्त हुआ | हम पर उन्हीं के मार्गदर्शन का असर हुआ, नाम था शंकरराव आडकर, जो आगे चलकर हमारे साथ ही साथ अपनी शैक्षणिक प्रगति करते हुए उच्च शिक्षा विभूषित हुए और अहमदनगर कॉलेज में हिंदी अध्यापक के रूप में दाखिल भी हुए | परिश्रमी शिक्षक उम्र भर विद्यार्थी रहता है, वे शंकरराव आडकर, प्राध्यापक आडकर तथा डॉ. शंकरराव आडकर का इतिहास बडा ही दिलचस्प है| हम उनके तब के कुछ विद्यार्थी उनकी शिक्षा और शिक्षा की अवस्था से भली भांति परिचित हैं|

'सुख दु:खे – समे कृत्वा, साभालाभो जया जयो'

भगवान श्रीकृष्ण के भगवत गीता की इसी सीख से उभयपक्षी लाभान्वित भी हुए हैं | सदभावनाएँ हरेक को बदल देती हैं |

स्वतंत्र भारत-वर्ष हर दिशा में अपनी तरक्की कर रहा था शिक्षा विभाग, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय में नए नए प्रयोग हो रहे थे | हमारे महाविद्यालय ने भी पचास साल पूर्व विद्यार्थियों की माँग, अध्यापकों का योगदान तथा सन्माननीय संस्था और मा. प्राचार्य बार्नबस जी की दूरदृष्टि से हिंदी विषय को बी. ए. तक शुरू कर हमारे जैसों पर मानों बड़ी मेहरबानी कर दी थी |

डॉ. आडकर जी ने अपने सहकारी डॉ. मुहम्मद आज़म तथा अन्यों की सहायता से हिंदी विषय के लिए विद्यार्थियों को इकट्ठा किया | कुछ विद्यार्थियों का सरकारी स्कॉलरशिप जैसी सुविधाएँ भी प्राप्त करा दी जिससे हम जैसों का खर्चा भी निकल आया और हिंदी विषय के प्रति रुचि भी बढ़ गई | विभाग की विद्यार्थी संख्या भी बनी रही | महाविद्यालय का एक सम्मानित विभाग गुणी अध्यापकों की मदद तथा परिश्रम से अनेक गुणी विद्यार्थियों को जीवन-यापन के कल्याण मार्ग पर पहुँचा सका |

आज समग्र सुविधाओं के साथ सरकारी अनुदान के साथ उच्च शिक्षा की तरक्की हो रही है | आज के अध्यापक, विद्यार्थी, उच्चशिक्षा से संबंधित सभी घटक आर्थिक दृष्टि से सबल हैं | परिवर्तन सभी ओर अच्छाइयाँ दिखा रहा है | आनंद है | पर शिक्षा की दशा आज भी अनेक प्रश्नचिन्हों को साथ लेकर समाधान ढूंढ रही है | प्रत्येक काल समस्याओं को लेकर आता है, साथ ही समाधान भी ढूंढता है |

हमारा हिंदी विभाग सुचारू ढ़ंग से गुणी अध्यापक और गुणी विद्यार्थियों के साथ हिंदी की प्रगति कर रहा | विद्यार्थियों का कल्याण कर रहा है | महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय की भी गरिमा बढ़ा रहा है | हम जैसे पहली पीढ़ी के बुजुर्ग विद्यार्थियों से भी संपर्क रख रहे है | हिंदी विभाग हमारा है और हम हिंदी के हैं | हमारी सर्वांगीण उन्नति हिंदी विभाग तथा विषय के कारण ही हुई है | सभी दृष्टियों से हिंदी भाषा ने, हिंदी विभाग ने हमें सभी सुख, समाधान, मान तथा सम्मान भी दिया है | कवि इकबाल कहते है –

सारें जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा |
हिंदी है हम, वतन है, हिन्दोस्तां हमारा |
जयहिंद, जयहिंद तथा जय हिंदी विभाग |

- **जीवेत शरद: शतम् –**

आज जिनके शुभ हाथों में देश की, महाविद्यालयीन शिक्षा, दीक्षा की, हमारे हिंदी विभाग की बागडोर है उन सभी सम्माननियों को हमारा सदैव साथ रहेगा, अच्छाईयों के हाथ हम बढ़ाते रहेंगे | सभी को प्रगति के लिए शुभकामनाएँ | खुद ही बनिये अपने जीवन के सारथि | हर तरक्की का मार्ग केवल परिश्रम है| सुख-समाधान, सुचारू जीवन सभी को दें – शुभ चिंतक |

प्रा. रामदास संभाजी शेटे
(पूर्व प्राचार्य, रयत शिक्षण संस्था, सतारा)

*** जीवन पलटा ***

इ. स. 1947 में जन्म, इ. स. 1958 में पिताजी नौकरी से निवृत्त, अत: माताजी के साथ गाँव की ओर | मैंने अहमदनगर में इ. स. 1959 में व्हर्नाकुल फाइनल, इ. स. 1963 में मैट्रिक और इ. स. 1967 में हिंदी विशेष विषय लेकर भारत सरकार की, अहिंदी भाषिकों की शिष्यवृति के साथ, अहमदनगर कॉलेज से बी. ए. (ऑनर्स) की परीक्षा उत्तीर्ण की| उसी वर्ष शादी – शुदा बना | एक बहन और एक बड़े भाईसाहब विदेश में, अन्य दो बड़ी बहनें अपने ससुराल, एक छोटी बहन की स्कूली शिक्षा गाँव की ओर माता–पिता के साथ, और मंझले भाईसाहब अपनी नौकरी के गाँव |

'हिंदी' विषय में स्नातक होने के कारण रयत शिक्षण संस्था में स्कूल– मास्टर के रूप में आदेश भी प्राप्त हुआ | अन्य अविवाहित मित्र आगेवाली पढ़ाई के बारे में सोच रहे थे | मेरी भी उनके साथ 'पुणे विश्वविद्यालय' में जाने की इच्छा थी, परंतु पिताजी के अल्प निवृत्ति – वेतन में पुण्य–नगरी का खर्चा असंभव ही था | महाविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रवर्तक गुरुवर्य प्रा. डॉ. श. के. आडकरजी से मिलकर समस्या कथन की और उनकी एक सलाह ने जीवन को पलटा |

उमर केवल 20 – 21 की होने के कारण, और दो साल तक स्नातक की डिग्री दूर समझकर, स्नातकोत्तर शिक्षा (पदव्युत्तर उपाधि) प्राप्त करना तय हुआ | पुणे में रहकर आगामी पढ़ाई, खर्चे वाली बात थी, परंतु अहिंदी भाषिकों की शिष्यवृत्ति के साथ ससुराल से भी कुछ सहायता मिलने की आशा पैदा हुई | स्कूली – मास्टरी करते – करते आगे चलकर ज्यादा से ज्यादा हेड – मास्टर बननेवाला मैं दो साल के बाद पदव्युत्तर उपाधि प्राप्त करके इ. स. 1969 में 'रयत शिक्षण संस्था' के ही महाविद्यालय में 'हिंदी' विषय का 'व्याख्याता' के रूप में दाखिल हुआ | संस्था के विविध महाविद्यालयों में और महाराष्ट्र के तीन जिलों में व्याख्याता, विभाग–प्रमुख और अंतिम 10 साल प्रधानाचार्य भी रहा | संस्था का आजीवन सदस्य, कार्यकारिणी सदस्य और लेखापरीक्षक भी बना | यथावकाश इ. स. 2007 में निवृत्त हुआ |

गत पचास वर्षों की घटनाओं की यह सारी शृंखला संभव हुई स्व. गुरुवर्य डॉ. शं. के. आडकरजी के 'तुम अभी छोटे हो, पढ़ाई जारी रखो' | इस एक वाक्यवाली सलाह से | उनके प्रति महाविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करता हूँ | डॉ. आडकरजी के सहयोगी प्रा. गुरुवर्य डॉ. मोहम्मद आजम और महाविद्यालय के तत्कालीन प्रधानाचार्य डॉ. थॉमस बार्नबस (टी. सर) का स्मरण आज भी सदा बना रहता है |

महाविद्यालय के हिंदी – विभाग की विद्यमान अध्यक्षा प्रा. डॉ. ऋचा शर्मा और उनके सहयोगी प्राध्यापकों को विशेष धन्यवाद! जिनके कारण आज विभाग की सुवर्ण – महोत्सवी वर्षगाँठ संपन्न हो रही है | विभाग के उत्तरोत्तर उत्कर्ष के लिए लाख – लाख शुभ – कामनाएँ | शुभम् – भवतु |

प्राचार्य विश्वास ग. काळे

(रयत शिक्षण संस्था, सातारा)

- किसी परिचयपत्र की अपेक्षा व्यक्तिगत सौन्दर्य स्वयं एक बड़ी सिफारिश है – अरस्तू

❖ ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना ❖

सन 1975 में मैने प्री. डिग्री के लिये अहमदनगर महाविद्यालय, अहमदनगर में प्रवेश लिया | उस समय हरे-भरे पेड–पौधे, रंग–बिरंगी बोगन बेल आदि से सुसज्जित अहमदनगर महाविद्यालय की घनी छाया में बार्नबस सर एक विशाल वटवृक्ष के समान शिक्षण– क्षेत्र में सर्व शिक्षण की नींव डाले खड़े थे | मेरे जैसी अनेक छात्राओं के लिये एक बुजुर्ग की छत्रछाया में शिक्षण हासिल करने का प्रयास कर रही विद्यार्थिनियों के लिये ये पिता स्वरूप थे | मुझे इस बात का गर्व है कि मैंने अपने कॉलेज–जीवन का प्रारंभ इस महाविद्यालय से किया |

द्वितीय वर्ष हिंदी–विभाग में प्रवेश लेते ही मुझे एक बात का समाधान मिला क्योंकि मुझे राष्ट्रभाषा से लगाव था ही और इसी विषय में मुझे शैक्षणिक– क्षेत्र में सर्वोच्च पढाई हासिल करनी थी डॉ.आडकर सर हिंदी–विभाग प्रमुख, आदरणीय डॉ. आजम सर, प्रा हर्दवाणी सर, डॉ.आडकर सर तथा डॉ.अंबेकर सर जैसे विद्वानों के कारण अहमदनगर महाविद्यालय का 'हिंदी–विभाग' महाराष्ट्र का एक अलग वैभव था | हिंदी– विभाग में कार्यरत सभी प्राध्यापक गण अपने–अपने क्षेत्र में पूर्ण पारंगत तथा विद्वान थे | इस विभाग के सभी प्राध्यापक विभाग में पढ़नेवाले सभी छात्र–छात्राओं का मार्गदर्शन स्नेहपूर्वक करते थे | जिसका जीता–जागता उदाहरण मैं स्वयं हूँ | डॉ. आजम सर के संशोधन वृत्ती के कारण मुझे एक नई दिशा प्राप्त हुई | उन्ही के कारण मेरा भविष्य में पी.एच.डी. करने का सपना पूर्ण हुआ | इसी प्रकार प्रा. हर्दवाणी के हिंदी– सिंधी भाषा के अनुवाद को ध्यान में रखते हुऐ उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने मराठी कवयित्री स्व. इंदिरा संत का काव्यसंग्रह 'मृण्मयी' का हिंदी भाषा में भावानुवाद किया और अखिल भारतीय हिंदी सेवी संस्थान इलाहाबाद से मुझे 'अनुवाद–शिरोमणी' की मानद उपाधि से गौरान्वित किया | डॉ. अंबेकर सर और डॉ. आडकर सर ने मुझे भाषण आदि के सारे गुण सेमिनार के माध्यम से सिखाये |

अहमदनगर महाविद्यालय के विशाल ग्रंथालय और उसकी अभ्यासिका में मैंने दिन भर अभ्यास किया | तब मा.हळबे मैडम(ग्रंथपाल) तथा श्री लोंढे सर और उनके सभी सहकारियों ने मुझे पी.एच. डी के अध्ययन करने में अनमोल सहकार्य किया| पी.एच.डी. प्राप्त करने के उपरांत आदरणीय यु. म. पठान सर के करकमलों द्वारा हिंदी–विभाग में मेरा सत्कार 1985 में हुआ | तब मुझे इस बात का एहसास हुआ कि मैं कितनी भाग्यशाली हूँ कि मुझे ऐसा गौरवशाली महाविद्यालय तथा ऐसा ज्ञानतृष्णा को तृप्त करने वाला हिंदी–विभाग मिला | जो इस वर्ष अपने स्वर्णिम पचास साल पूर्ण कर रहा है | जिस विभाग ने मेरा जीवन सफल बनाया तथा मुझे एक नयी दिशा दिखाई ऐसे महाविद्यालय के हिंदी–विभाग को मेरा शत–शत प्रणाम |

हिंद सेवा मण्डल के पेमराज सारडा महाविद्यालय में मैं सन 1988 से हिंदी प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत हूँ तथा सन 16 जुलाई 2014 से इसी महाविद्यालय में प्र.प्राचार्य के रूप में महाविद्यालय की जिम्मेदारी संभाल रही हूँ | मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण डिग्री 'यूनिवर्सिटी ऑफ साऊथ अमेरिका' ने मुझे 'डी.लिट' की पदवी से सम्मानित किया उसका श्रेय मैं अहमदनगर महाविद्यालय के हिंदी–विभाग को ही देना चाहूँगी |

आज हिंद विभाग–प्रमुख डॉ. ऋचा शर्मा, डॉ. साताप्पा, प्रा. आनंद त्रिपाठी तथा प्रा.अशोक घोरपडे आदि ने भी हिंदी–विभाग के वैभव को पहले की तरह ही गरिमामय बनाऐ रखा है | प्रत्येक वर्ष नये–नये कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जो सराहनीय है | मुझे इस बात का अभिमान है कि मेरा एक छात्र प्रा. अशोक घोरपडे आज हिंदी विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत है और अपनी जिम्मेदारी पूर्ण प्रामाणिकता और परिश्रम से निभा रहा है |

मेरे लिए गौरव की बात है कि मेरा कॉलेज –जीवन का सफर टी बार्नबस (तात्या) से शुरू हुआ और आज भी टी बार्नबस (तात्या) तक सफलता पूर्वक चल रहा है क्योंकि यह तो मेरा फलता–फूलता, न्यारा, प्यारा, अनमोल मायका है |

डॉ. रेखी अमरजा अजित
M. A. Ph.D., D. Lit (USA)
(प्राचार्य पेमराज सारडा महाविद्यालय, अहमदनगर)

❖ सुनहरी यादों का सफर ❖

प्रा. हर्दवाणी सर को समर्पित.....

गुरु कहते है,.....
मत सोच की तेरा,
सपना क्यों पूरा नहीं होता,
हिम्मत वालों का इरादा,
कभी अधूरा नहीं होता,
जिस इंसान के कर्म,
अच्छे होते हैं,
उसके जीवन में कभी,
अंधेरा नहीं होता |

अहमदनगर कॉलेज के हिंदी – विभाग का मैं सन 1995 से 1999 का छात्र रहा हूँ | उस समय मेरा प्रा. हर्दवाणी सर से परिचय हुआ था | रोज हमारा 7:30 को सुबह पहला लेक्चर होता था जिसमें हम हिंदी साहित्य जगत से परिचित होते थे | साहित्य-कारों की सुंदर रचनाओं में हमारे भविष्य की चिंता मिट जाती थी | भाव–विभोर होकर हम गद्य–पद्य, नाटक, निबंध, कहानियों का रस–ग्रहण किया करते थे |

उन दोनों प्रा. हर्दवाणी सर हमारे शुद्ध – लेखन का विशेष रूप से ध्यान रखते थे | जैसे की पहला ऊँची आवाज में बोलते थे | आज भी उनकी आवाज मेरे कानों में गूंजती है | पंडित नेहरू विद्यालय में, मैं जब कक्षा सातवीं एवं आठवी को हिंदी पढ़ाता हूँ तब मैं उन्हीं का अनुकरण करके 'कि' पर जोर देकरउच्चारित करता हूँ | उस समय मुझे हर्दवाणी सर याद आते रहते है |

हिंदी विभाग के प्रथम अध्यक्ष श्री.शं.के.आडकर की तबीयत खराब हो जाने के कारण हम सभी एम.ए. के छात्रों कों प्रा. हर्दवाणी सर उनके मकान लेकर गए हमने मकान की सफाई की उनकी रचनाओं को शब्द कोश को देखकर हम अचंभित हुए | शं. के. आडकर जी ने मेरी कापी पर एक वाक्य लिखा जो मुझे आज भी याद है–जिंदगी जिंदा दिली का नाम है' हमें प्रा. हर्दवाणी सर के मार्गदर्शन में मेहनत करने की अत्याधिक प्रेरणा मिली थी | जिससे आत्मविश्वास काफी मात्रा में बढ़ गया था |

सन 1998 – 99 में मैने कागज के टुकड़ों से नगर – कॉलेज के संस्थापक श्री. बी. पी. हिवाळेजी का व्यक्तिचित्र कॉलेज में बनाकर कॉलेज को भेंट किया उस समय प्रा. हर्दवाणी सर ने मेरे उस चित्र को मासिक के मुखपृष्ठ पर छापने हेतु प्रयास करके मुझे सफलता दिलाई जिससे मै 'आर्टिस्ट ऑफ कॉलेज' कहा जाने लगा | यह बात मैं कभी नहीं भूल सकता |

मुझे याद है प्रा. हर्दवाणी सर हर साल हमें सैर पर ले जाया करते थे | उनके साथ हमने भिमाशंकर ज्ञानेश्वर मंदिर महाबलेश्वर जैसे रमणीय स्थलों की सैर की है |

जिस दिन भी लेक्चर में उदासीनता छा जाती थी सर हमें कॉलेज की कँटिन में चटणी – वडा, चाय जरुर पिलाते थे |

उनके लिए कुछ पंक्तियाँ कहना चाहूँगा .....

"दिन बीत जाते है कहानी बनकर,
यादें रह जाती है निशानी बनकर,
पर रिश्ते हमेशा रहते है,

कभी ओंठों की मुस्कान बनकर,
तो कभी आँखों का पानी बनकर"

श्री. सुदेश चंदर छजलाने
(पंडित नेहरू हिंदी विद्यालय, किला मैदान, अ.नगर)

❖ यादें .....❖

मैं 1999 से अहमदनगर महाविद्यालय का छात्र रहा | सन् 2002 में S.Y.B.A. में मेरा हिंदी विभाग से प्रथम परिचय हुआ | उस समय यह पता नहीं था कि भविष्य में हिंदी विभाग और मैं एक–दूसरे से इतने जुड़ जाएँगे | सन् 2004 में बी. ए. और सन् 2006 में एम. ए. प्रथम क्रमांक से उत्तीर्ण हो मुझे शंकर केशव आड़कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया | मैंने विभागप्रमुख डॉ. ऋचा शर्मा मैडम के मार्गदर्शन में M. Phil किया और अब Ph.D. भी उनके मार्गदर्शन में कर रहा हूँ | मैंने सन् 2011 से 2017 तक विभाग में अध्यापन का कार्य भी किया है |

मेरे जीवन को आकार देने में, मेरे अध्यापन कौशल में विभाग प्रमुख डॉ ऋचा शर्मा मैडम और विभाग का अनमोल योगदान है | हिंदी विभाग महाविद्यालय का एक सतत सक्रिय और गतिशील विभाग है | विभाग द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नित - नवीन उपक्रमों का आयोजन किया जाता है | विभागप्रमुख डॉ. शर्मा मैडम का स्नेहपूर्ण और आत्मीय व्यवहार हम सभी विद्यार्थियों के जीवन की अनमोल धरोहर है | मेरे जीवन के कई अभिन्न मित्र मुझे विभाग के माध्यम से ही मिले |

हिंदी विभाग में एक विद्यार्थी के रूप में बिताया गया समय मेरे जीवन के सुनहरे कालखंडों में से है | मैं सदैव हिंदी विभाग के प्रति कृतज्ञ हूँ |

प्रा. आनंद त्रिपाठी
अध्यक्ष – हिंदी विभाग
के. जी. महाविद्यालय, अहमदनगर

- भार हल्का हो जाता है यदि प्रसन्नतापूर्वक उठाया जाए – ओविड

- सृजन – क्षण एक उमड़ती हुई शक्तिशाली बाढ़ के समान कलाकार के अस्तित्व को झकझोर देता है – महादेवी वर्मा

❖ यादें ❖

वर्ष 2005 में मैंने हिंदी विभाग में ॲडमिशन लिया | हिंदी विभाग में प्रवेश लेने का मुख्य कारण हिंदी विषय के प्रति प्रेम और शर्मा मैम एवं गोरे मैम का आकर्षण ही था | भाषा विज्ञान विषय से काफी डर लगता था पर शर्मा मैम ने उस विषय को भी बड़े सरलता से समझाया भारती मैम, ठोंबरे सर, चव्हान सर सभी ने मुझे प्रोत्साहित किया |

विद्यार्थी जीवन में सही मार्गदर्शन मिले तो हम अपना भविष्य सँवार सकते हैं यह शिक्षा हमें प्रदान की | हिंदी विभाग ने सन् 2006 और 2009 में राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सन् 2006 में राज्यस्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया था उस संगोष्ठी से हमने काफी कुछ सीखा | आज हिंदी विभाग की शुक्रगुजार हूँ जिनके अपार, प्रेम, स्नेह एवं मार्गदर्शन के कारण मैं आज दिल्ली पब्लिक स्कूल, रतलाम में हिंदी (P. G. T) शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ |

धन्यवाद

प्रा. पूजा त्रिपाठी
(एम. ए. बी. एड.)
दिल्ली पब्लिक स्कूल, रतलाम

❖ यादें मेरे कॉलेज की..... ❖

मैंने अहमदनगर महाविद्यालय में सन 2011 में प्रवेश लिया था | मेरा हिंदी विभाग से परिचय S.Y.B.A. में हुआ स्पर्धा परीक्षाओं में मैं मुख्य रूप से सहभागी हुआ हूँ जिस कारण मुझे कई पारितोषिकों से सम्मानित भी किया गया | काव्यपाठ प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता,वक्तृत्व स्पर्धा आदि में मुझे अपना कौशल दिखाने की प्रेरणा तथा अवसर हिंदी से मिला | इसका पूरा श्रेय हिंदी विभागप्रमुख डॉ. ऋचा शर्मा मैडम और विभाग को जाता है | जिस कॉलेज से मैंने शिक्षा ग्रहण की आज उसी कॉलेज में एक प्राध्यापक का कार्य कर रहा हूँ | इसलिए मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूँ |

हिंदी विभाग मेरे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है | आज भी मुझे प्रा. आशोक सर की कहीं हुई बात याद है कि "प्रयास इतना खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे," हर तरक्की का मार्ग केवल परिश्रम है | मुझे याद है कि एम.ए. में हमने दो बार अध्ययन यात्रा की थी जिसमें हमने औरंगाबाद की औरंगाबाद युनिव्हर्सिटी, लेनिया, बीबी का मकबरा जैसे अन्य रमणीय स्थलों की सैर भी की थी | जिसमें प्रा. आशोक सर, प्रा. आनंद सर और डॉ. रुपाली दळवी मैडम भी हमारे साथ थे |

अहमदनगर महाविद्यालय का हिंदी विभाग सतत सक्रिय और गतिशील विभाग हैं | विभाग द्वारा विद्यार्थियों के कौशल को निखारने के लिए हमेशा नए उपक्रमों का आयोजन किया जाता है | अध्यापकों का मित्रवत् व्यवहार और विभागप्रमुख का एक माँ की तरह प्यार हम जीवन में नहीं भूल सकते | अत: मैं हमेशा हिंदी विभाग के ऋण में रहना ही पसंद करूँगा | हिंदी विभाग में एक विद्यार्थी के रूप में बिताए उन स्वर्णिम पलों को जब भी मैं याद करता हूँ तब अत्यंत प्रसन्नता महसूस करता हूँ |

प्रा. शेख फरहान लतीफ
हिंदी विभाग

(अ.नगर महाविद्यालय अ.नगर)

❖ हिंदी विभाग के बारे में मेरे विचार ❖

मैं नीलम पांडे वर्तमान में यू. पी. के देवरिया जिले के एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय में शिक्षिका के रूप में कार्यरत हूँ | मैंने सन 2003 से 2004 में एम ए. हिंदी विषय में आदरणीय विभागाध्यक्ष डॉ. ऋचा शर्मा मैडम की छत्रछाया में किया था | अहमदनगर कॉलेज का वातावरण मेरे लिए एकदम नया था मेरे मन में कई सारी बातें हिलोरे ले रही थीं | मैं सोच रही थी कि पता नहीं हिंदी विभाग कैसा होगा ? गुरुजन कैसे होंगे ? मेरा उनसे सामंजस्य बन पायेगा अथवा नहीं ? मेरे इन सब प्रश्न रूपी लहरों का अंत धीरे – धीरे तब होने लगा, जब मैं अपनी हिंदी विभाग की प्रमुख शर्मा मैडम के संपर्क में आई | उनके मृदुल और हर तरह के सहयोग की भावना का स्वभाव, ने मेरे अंदर एक अलग चीज को पहचाना | मैं विभाग के गुरुजनों अम्बेकर सर, कौस्तुभ सर और हमारी शर्मा मैडम, सबके अपने पन और प्यार की वजह से पढाई में ही नहीं, अपितु मंचन के क्षेत्र में भी अपने डर को भगाकर, अपनी प्रतिभा को निखारा था |

मुझे आज भी जनवरी 2004 का महिना नहीं भूलता | जब एम. ए. द्वितीय वर्ष के दौरान मेरी शादी तय हो गई थी | यह बात जब शर्मा मैडम को पता चली तो वे मेरे घर मेरे पिता से मिलने आई | उन्होंने मेरे पिता से आग्रह किया कि वे मेरी शादी में जल्दबाजी न करें | मुझे आगे बढ़ने का मौका दे | लेकिन मेरे पिता की भी कुछ मजबूरियाँ थीं, जिस कारण मेरी शादी टल न सकी पर मैं उस ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ जिसने मुझे ऐसे गुरुजनों की छत्रछाया में रहने का और अपना जीवन सँवारने का अवसर दिया | वें दो साल मेरे जीवन का सबसे सुनहरा समय था, जिसमें इतना प्यार, अपनापन और आगे बढ़ने की प्रेरणा और मार्गदर्शन मिला |

प्रा.नीलम पाण्डेय

(पूर्व माध्यमिक विद्यालय, यू. पी.)

- *किसी कमी के साथ एक हीरा बिना किसी कमी के पत्थर से बेहतर है |*

  - कन्फ्यूशियस

- विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं |

  - बर्नार्ड शॉ

- संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सब से बढ़कर है |

  - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्राचार्य डॉ. आर. जे. बार्नबस सर द्वारा डॉ. ऋचा शर्मा जी का उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान के 'धर्मवीर भारती पुरस्कार' हेतु सत्कार

प्राचार्य डॉ. आर. जे बार्नबस सर द्वारा विभाग का छात्र चेतन विष्णु रवेलिया राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा नेट + जे. आर. एफ उत्तीर्ण होने पर सत्कार

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस पर आयोजित पोस्टर प्रदर्शनी

विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाईन कार्यक्रम 'रचनाकार हमारे साथ' में आमंत्रित रचनाकार डॉ. सुशील आजाद (मॉस्को) वर्ष – 2019

राष्ट्रभाषा सभा पुणे की एकांकी स्पर्धा में विभाग के छात्रों ने द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया – वर्ष 2020

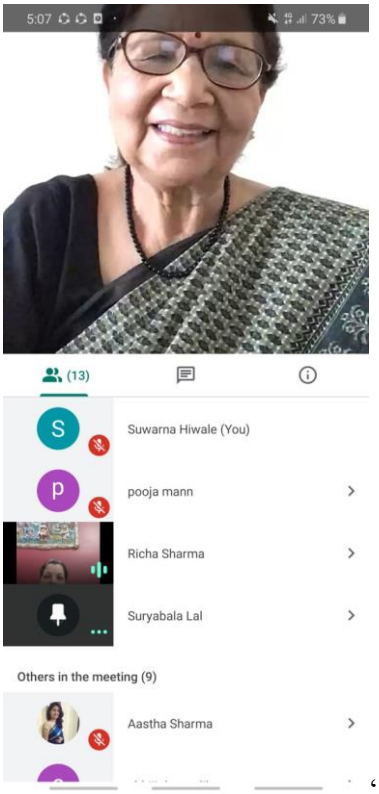

'रचनाकार हमारे साथ' कार्यक्रम में आमंत्रित विख्यात कथाकार सूर्यबाला जी – वर्ष – 2019

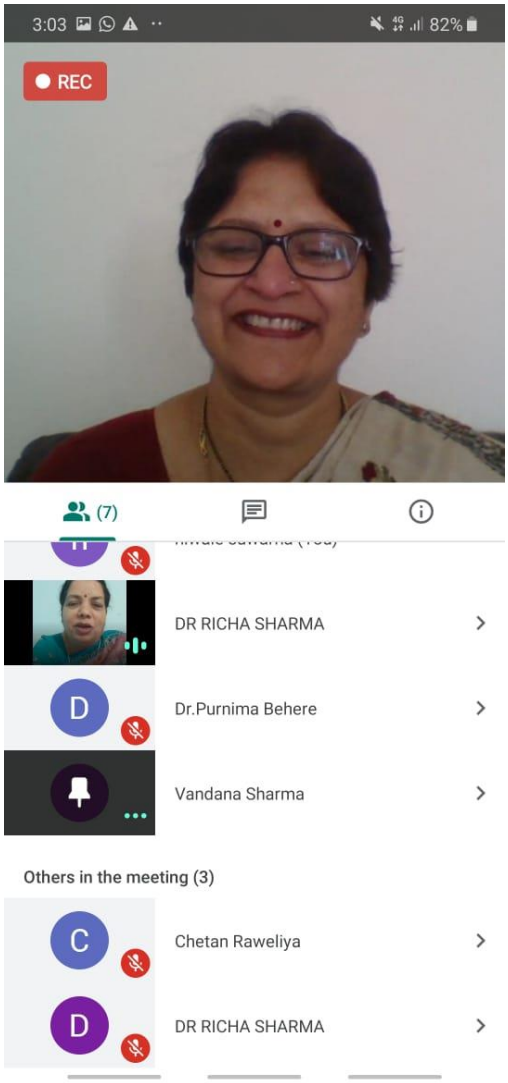

'रचनाकार हमारे साथ' कार्यक्रम में आमंत्रित लेखिका डॉ. वंदना मुकेश (लंदन) वर्ष – 2019

'

हिंदी दिवस समारोह – 2019